INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

वरिष्ठ अध्यापक

RAJASTHAN - 2ND GRADE

PAPER – 1

BHAG – 2

भूगोल (भारत + विश्व) + अर्थव्यवस्था + राजव्यवस्था

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"राजस्थान 2nd Grade (वरिष्ठ अध्यापक) (संस्कृत शिक्षा विभाग)"*** *को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"राजस्थान 2nd Grade (वरिष्ठ अध्यापक) (संस्कृत शिक्षा विभाग)"*** *भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/tiy32p

Online Order करें - https://shorturl.at/coE19

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	विश्व भूगोल	
1.	महाद्वीप, महासागर और उनकी विशेषताएं	1
2.	वैश्विक पवन	13
3.	पर्यावरणीय मुद्दे और रणनीतियाँ	16
4.	वैश्वीकरण और इसके प्रभाव	32
5.	जनसंख्या वितरण और प्रवास	34
	भारत का सामान्य ज्ञान	
1.	स्थिति एवं विस्तार	38
2.	मानसून प्रणाली	47
3.	जल निकासी (अपवाह तंत्र)	50
4.	वनस्पति	57
5.	खनिज और ऊर्जा संसाधन	61
	भारतीय अर्थव्यवस्था	
1.	भारत में कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र में वृद्धि और विकास	71
2.	राष्ट्रीय आय और उत्पाद	95
3.	भारत का विदेशी व्यापार : रुझान, संरचना और दिशा	100
	भारतीय संविधान	
1.	भारत सरकार के 1919 और 1935 के अधिनियमों के विशेष संदर्भ में भारत का संवैधानिक इतिहास	101
2.	अम्बेडकर की भूमिका, संविधान निर्माण	103
3.	भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताएं	107
4.	मौलिक अधिकार	110
5.	राज्य नीति के निदेशक सिद्धांत	113
6.	मौलिक कर्तव्य / मूल मौलिक	115
7.	भारतीय राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के कार्यलय	119
8.	भारत का संघीय सिस्टम	139

9.	राजनीतिक दल और दबाव समूह	144
10.	भारत की विदेशी नीति के सिद्धांत और इसके निर्माण में नेहरू का योगदान	149
11.	भारत और संयुक्त राष्ट्र संघ	166

विश्व भूगोल

अध्याय – 1

महाद्वीप, महासागर और उनकी विशेषताएं

महाद्वीप (Continent)

- समुद्र तल से ऊपर उठे हुए पृथ्वी के विशाल भू-खंड को महाद्वीप कहते हैं।
- पृथ्वी पर मुख्यतः सात विशाल भू-खंड है अथवा महाद्वीप है - एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, अंटार्कटिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया।
- पृथ्वी पर एशिया सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।
- एशिया और यूरोप यूराल पर्वत और यूराल नदी के द्वारा एक- दूसरे से अलग होते हैं।
- अफ्रीका विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है।
- अफ्रीका को एशिया से स्वेज नहर अलग करती है।
- अफ्रीका महाद्वीप के बीच में से विषुवत् रेखा (equatorial) गुजरता है इसलिए अफ्रीका का आधा भाग उत्तरी गोलार्द्ध में तथा आधा भाग दक्षिणी गोला गोलार्द्ध में है।
- उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप पनामा देश की पूर्वी सीमा पर मिलते हैं।
- संपूर्ण उत्तरी अमेरिका महाद्वीप उत्तरी गोलार्द्ध में है, जबकि दक्षिणी अमेरिका का अधिकांश भाग दक्षिणी गोलार्द्ध में है।
- ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप दक्षिणी गोलार्द्ध में है।
- ऑस्ट्रेलिया को द्वीपीय महाद्वीप भी कहते हैं।
- अंटार्कटिका का क्षेत्रफल यूरोप और ऑस्ट्रेलिया के सम्मिलित क्षेत्रफल से अधिक है।
- अंटार्कटिका महाद्वीप के लगभग केंद्र में दक्षिणी ध्रुव स्थित है।
- अंटार्कटिका महाद्वीप की एकमात्र ऐसा महाद्वीप है, जहां मनुष्य स्थायी रूप से नहीं बसा है।
- उत्तरी गोलार्द्ध को स्थल गोलार्द्ध को भी कहते हैं।
- इस गोलार्द्ध में पृथ्वी के कुल स्थलीय भाग का 8.5 प्रतिशत भू-भाग विद्यमान है।

एशिया (Asia) :-

- एशिया शब्द की उत्पत्ति हिब्रू भाषा के आसु से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ उदित सूर्य से है। यह संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है वह विश्व के लगभग 30% क्षेत्रफल पर विस्तृत है। इससे होकर तीन प्रमुख अक्षांशीय वृत्त विषुवत, कर्क एवं आर्कटिक गुजरते हैं।
- एशिया के उत्तर में आर्कटिक महासागर, दक्षिण में हिंद महासागर और पूर्व में प्रशांत महासागर है। पश्चिम में यूराल पर्वत, कैस्पियन सागर, काला सागर व भूमध्य सागर एशिया और यूरोप की सीमा बनाती है।
- लाल सागर और स्वेज नहर एशिया को अफ्रीका से अलग करता है।
- बेरिंग जलसंधि एशिया को उत्तरी अमेरिका से अलग करती है।
- यहाँ विश्व की लगभग 60% जनसंख्या (सर्वाधिक जनसंख्या वाला महाद्वीप) निवास करती है।
- एशिया महाद्वीप में अति प्राचीन युग के स्थल खंड अंगरालैंड (रूस एवं चीन) और गोंडवाना - लैंड (प्रायद्वीपीय भारत) स्थित है।
- एशिया महाद्वीप में तीन प्रमुख प्रायद्वीप हैं - अरब का प्रायद्वीप, दक्कन का प्रायद्वीप, इंडोचीन का प्रायद्वीप। अरब प्रायद्वीप विश्व का सबसे बड़ा प्रायद्वीप है।
- एशिया में विश्व का सबसे ऊंचा पर्वत शिखर हिमालय पर्वतमाला श्रेणी का माउंट एवरेस्ट (8,850 मीटर) है, जो नेपाल में स्थित है, जहां इसे सागरमाथा के नाम से जानते हैं।
- विश्व का सर्वाधिक विस्तृत पठार तिब्बत का पठार है, जो मध्य एशिया में 200,000 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है।
- एशिया में विश्व का सबसे ऊंचा पठार 'पामीर' है जिसकी ऊंचाई 4,875 मीटर है। इसी कारण पामीर को विश्व की छत (Ruf of the World) कहते हैं।
- एशिया में विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश चीन है।
- एशिया में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा देश चीन तथा सबसे छोटा देश मालदीव है।
- एशिया में विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला देश सिंगापुर है।
- एशिया के स्थलरुद्ध (जिसकी सीमा समुद्र को नहीं छूती) देश है - कजाकिस्तान, अफगानिस्तान, मंगोलिया, नेपाल, भूटान, तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान, तजाकिस्तान एवं लाओस स्थल रुद्ध देशों में कजाकिस्तान सबसे बड़ा देश है, जबकि मंगोलिया दूसरा सबसे बड़ा स्थल रुद्ध देश है। लाओस दक्षिण पूर्व एशिया का एकमात्र स्थल रुद्ध देश है, यह पूर्व फ्रांसीसियों का उपनिवेश था।
- एशिया में सबसे लंबी नदी यांग्सी तथा अधिकतम गहराई मृत सागर (397 मीटर) की है।
- एशिया में फिलीपींस द्वीप समूह के पास विश्व का सबसे गहरा सागरीय गर्त प्रशांत महासागर में मेरियाना गर्त (11,022 मी.) गहरा है।
- विश्व की सबसे गहरी झील बैकाल झील (धरातल से 1,940 मीटर गहरा और समुद्र तल से 1,485 मीटर गहरा) एशिया में स्थित है।
- विश्व की सबसे बड़ी झील (आंतरिक सागर) कैस्पियन सागर (3,71,800 वर्ग किमी क्षेत्र में विस्तृत) एशिया महादेश में ही स्थित है।

नोटः रूस की एशियाई भाग को साइबेरिया कहते हैं। बैकाल झील एवं कैस्पियन सागर साइबेरिया में ही हैं।

- एशिया में विश्व की सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित खारे पानी की झील पैंगाग झील (4,267 मीटर ऊँचा) लद्दाख वह तिब्बत में स्थित है।
- एशिया महाद्वीप में विश्व का सर्वाधिक वर्षा वाला क्षेत्र मासिनराम (11,405 मिमी.) मेघालय, भारत में है। (इससे पहले चेरापूँजी सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान था।)
- विश्व की सबसे ऊंची रेलवे लाइन का निर्माण चीन में किया गया है। चीन के छिगहाये प्रांत से शुरू होकर तिब्बत के ल्हासा तक फैली इस रेलवे लाइन की ऊंचाई 5,072 मीटर है।
- महावेली गंगा श्रीलंका की सबसे लंबी नदी है ।
- एशिया में विश्व का सबसे लंबा रेलवे प्लेटफार्म गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) भारत में स्थित है। इसकी लंबाई 1.3 किमी है। इससे पूर्व खड़गपुर सबसे लंबा प्लेटफार्म था।
- चीन विश्व का सर्वाधिक मछली पकड़ने वाला देश है। (दूसरा स्थान- जापान)
- विश्व का सर्वाधिक समाचार पत्र पढ़ने वाला देश हांग कांग है।
- विश्व का सर्वाधिक डाकघर वाला देश भारत है।
- प्रशांत महासागर में गिरने वाली एशिया की प्रमुख नदियाँ हैं - हागहों (पीली नदी), आमूर, सिक्यांग और यांग्त्सीक्यांग ।
- आर्कटिक महासागर में गिरने वाली एशिया की प्रमुख नदियाँ हैं (जिसका मुहाना शीत ऋतु में जम जाता है) लीना, ओबे, येनेसी।
- भूमध्य सागर जलवायु के एशियाई देश- साइप्रस, जॉर्डन, टर्की (तुर्की), इजराइल, लेबनान।
- एशिया के सबसे घना बसा द्वीप जावा है।
- एशिया में सर्वाधिक जूट एवं गन्ना उत्पादक देश क्रमशः बांग्लादेश एवं भारत हैं।
- एशिया में सर्वाधिक जल विद्युत का विकास जापान में हुआ है।
- एशिया का सबसे बड़ा रेल मार्ग ट्रांस -साइबेरियन रेल मार्ग है यह लेनिनग्राड से ब्लाडीवोस्टक तक जाता है। इसकी लंबाई 9,438 किमी. है।
- एशिया की सबसे लंबी रेलवे सुरंग शिकन जापान (Sikan) में है, जो 53.85 किमी लंबी है। समुद्र तल से इसकी गहराई 240 मीटर है।
- एशिया का सबसे बड़ा रबर -उत्पादक व निर्यातक देश थाईलैंड, मलेशिया और इंडोनेशिया है।
- एशियाई देश चीन तंबाकू, गेहूँ, चावल आदि के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान रखता है।
- एशियाई देश जापान शहतूत की पत्तियों पर पाले गए रेशम के कीड़ों से प्राप्त कच्चा रेशम पैदा करने में विश्व में प्रथम स्थान है।
- एशिया में विश्व का सर्वाधिक प्राकृतिक रबर उत्पादित करने वाला देश थाईलैंड है।
- एशिया का सबसे अधिक टिन -उत्पादक देश मलेशिया है। टिन के निर्यात में यह विश्व में प्रथम स्थान पर है। मलेशिया के इपोह (किन्ता - केलांग घाटी) टिन खनन का प्रमुख केंद्र है।
- एशिया में विश्व का सर्वाधिक जलयान बनाने वाला देश जापान है।
- आर्कटिक एवं प्रशांत महासागर को जोड़ने वाला जलडमरूमध्य बेरिंग जलडमरूमध्य (अलास्का व कमचातका प्रायद्वीप के बीच) है।
- जापान का नागासाकी शहर क्यूशू द्वीप पर स्थित है जापानी लोगों को चाय अत्यधिक प्रिय पेय पदार्थ है और यह लोग चाय का एक विशेष उत्सव चा-नू-यू मनाते हैं।
- बेरिंग जलसंधि अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा के समानान्तर स्थित है।
- विश्व में सिंचाई नहरों का सबसे बड़ा जाल पाकिस्तान में है।
- म्यांमार अपने सुंदर बौद्ध मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है
- स्वर्णिम त्रिभुज के अंतर्गत लाओस थाईलैंड- आते हैं।

<u>अफ्रीका (Africa) :-</u>

- एशिया के बाद अफ्रीका विश्व का सबसे बड़ा दूसरा महाद्वीप है।
- अफ्रीका को एशिया से अलग करने वाली बड़ी नहर स्वेज नहर है।
- अफ्रीका महाद्वीप में विषुवत वृत्त (equator) बीच से गुजरता है, इसलिए इसका आधा भाग उत्तरी गोलार्द्ध में तथा आधा भाग दक्षिणी गोलार्द्ध में है।
- अफ्रीका महाद्वीप का कुल क्षेत्रफल 2,97,85000 वर्ग किमी है। इसमें 54 देश हैं।
- अफ्रीका महाद्वीप पृथ्वी के कुल क्षेत्रफल क्षेत्र का 20.4% है।
- अफ्रीका महाद्वीप को 1940 ई. से पूर्व अंध महाद्वीप (dark continent) कहा गया।
- अफ्रीका महाद्वीप के मध्य से होकर विषुवत रेखा और सुदूर उत्तरी और दक्षिणी सीमा पर कर्क और मकर रेखाएँ गुजरती है अफ्रीका ही एकमात्र ऐसा महाद्वीप है जिसमें से कर्क और मकर रेखाएँ गुजरती है।
- अफ्रीका महाद्वीप का विस्तार 37° अक्षाश से 35° अक्षाश के मध्य एवं 18° पश्चिमी देशांतर 51° पूर्वी देशांतर के मध्य है।
- अफ्रीका महाद्वीप का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश नाइजीरिया है।
- अफ्रीका महाद्वीप में विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल सहारा है।
- अफ्रीका महाद्वीप में विश्व की सबसे लंबी नदी नील है,जिसका उद्गम स्थल विक्टोरिया झील है।
- अफ्रीका महाद्वीप में विश्व का सबसे गर्म स्थल अलअजीजियाह (लीबिया) स्थित है।

2. निक्षेपमूलक द्वीप (Depsitinal Islands)

(i) नदी निक्षेप से बने द्वीप

(ii) हिमानी निक्षेप से बने द्वीप

(iii) तरंग नीचे से बने द्वीप

3. अपरदनमूलक द्वीप (Ersinal Islands)

(i) हिमानी अपरदन से बने द्वीप

(ii) नदी अपरदन से बने द्वीप

(iii) सागरीय लहरों के अपरदन से बने द्वीप

4. ज्वालामुखी द्वीप (Volcanic Islands)

5. प्रवाल या कोरल द्वीप (Coral Islands)

विश्व के प्रमुख द्वीप

क्र.सं.	**नाम**	**स्थिति**
1.	ग्रीनलैंड	उत्तरी अटलांटिक (डेनिस)
2.	न्यू गिनी	दक्षिण-पश्चिम प्रशांत महासागर (आडरियन, जावा इंडोनेशिया का पश्चिमी भाग: पापुआ न्यू गिनी का पूर्वी भाग)
3.	बोर्निओ	पश्चिमी मध्य प्रशांत महासागर इंडोनेशिया का दक्षिणी भाग, ब्रिटिश प्रोटेक्टरेट और मलेशिया का उत्तरी भाग)
4.	मेडागास्कर	हिंद महासागर (मलागासी गणतंत्र)
5.	बेंफिन	उत्तरी अटलांटिक (कनाडा)
6.	सुमात्रा	उत्तरी हिंद महासागर (इंडोनेशिया)
7.	होंसु	जापान सागर प्रशांत महासागर (जापान)
8.	ग्रेट ब्रि	उत्तरी -पश्चिमी यूरोप (इंग्लैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स)
9.	विक्टोरिया	आर्कटिक महासागर(कनाडा)
10.	ईल्समिटे	आर्कटिक महासागर (कनाडा)
11.	सेलेबीज	पश्चिमी मध्य प्रशांत महासागर (इंडोनेशिया)
12.	दक्षिणी द्वीप	दक्षिण प्रशांत महासागर (न्यूजीलैंड)
13.	जावा	हिंद महासागर (इंडोनेशिया)
14.	उत्तरी द्वीप	दक्षिण प्रशांत महासागर (न्यूजीलैंड)
15.	क्यूबा	कैरीबियन सागर (गणतंत्र)
16.	न्यूफाउंडलैंड	उत्तरी अटलांटिक (कनाडा)
17.	लूजोन	पश्चिम मध्य प्रशांत महासागर (फिलीपींस)
18.	आइसलैंड	उत्तरी अटलांटिक महासागर(गणतंत्र)
19.	मिंडनाओ	पश्चिमी मध्य प्रशांत महासागर (फिलीपींस)
20.	आयरलैंड	उत्तरी अटलांटिक महासागर (दक्षिणी भाग गणतंत्र, उत्तरी भाग ग्रेट ब्रिटेन के अधीन)
21.	होक्काइडो जापान सागर	प्रशांत महासागर (जापान)
22.	हिस्पानियोला	कैरीबियन सागर (डोमोनिकन गणतंत्र पूर्वी भाग हैती पश्चिमी भाग)
23.	तस्मानिया	ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण में (ऑस्ट्रेलिया)
24.	श्रीलंका	हिंद महासागर (गणतंत्र)
25.	सखालिन	जापान के उत्तर में (रूस) (कराफुटो)
26.	बैंनक्स	आर्कटिक महासागर (कनाडा)
27.	डिवोन	आर्कटिक महासागर (कनाडा)
28.	तियरा डेल	दक्षिण अमेरिका का दक्षिणी छोर फ्यूगो (पूर्वी भाग अर्जेंटीना, पश्चिमी भाग चिली)
29.	क्योसू जापान	सागर- प्रशांत महासागर जापान

दूरी में 9000 किमी तथा न्यूयॉर्क से सिडनी की दूरी में लगभग 6500 किमी की बचत होती है।

- इस नहर के निर्माण से सबसे अधिक लाभ संयुक्त राज्य अमेरिका को हुआ है। इससे पश्चिमी व पूर्वोत्तर से ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिण अमेरिका व जापान के बंदरगाहों की दूरी कम हो गयी है।
- इस नहर द्वारा व्यापार में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। इसके द्वारा अंध (अटलांटिक) महासागर एवं प्रशान्त महासागरों के तटीय देशों के बीच व्यापार बहुत बढ़ गया है।
- इस नहर की आर्थिक महत्व स्वेज नहर की अपेक्षा कम है। फिर भी दक्षिण अमेरिका की अर्थव्यवस्था में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।
- इस नहर द्वारा कैलीफोर्निया से पेट्रोल, चिली से शोरा व ताँबा, चीन से चाय व रेशम, आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्ड से मांस, मक्खन, पनीर व चमड़ा, पूर्वी अमेरिका से तैयार माल, कपड़ा, मशीनें, दवाइयाँ आदि महासागरीय देशों को भेजी जाती हैं।

विश्व के आन्तरिक जलमार्गों के विकास

- महाद्वीपीय या स्थलीय भागों में स्थित नदियाँ तथा झीलें विश्व में आन्तरिक जलमार्ग के प्रमुख साधन हैं। आन्तरिक जलमार्गों का विकास नहरों की नौगम्यता, चौड़ाई-गहराई, जल-प्रवाह की निरन्तरता व प्रयुक्त परिवहन तकनीक पर निर्भर करता है। आन्तरिक जलमार्गों के लिए ऐसी नदियाँ तथा झीलें उपयुक्त मानी जाती हैं, जिनमें –
- वर्ष पर्यन्त पर्याप्त जल रहता है।
- जल की पर्याप्त गहराई होती है।
- तली का ढाल धीमा होता है।
- नदियों का जल गाद मुक्त रहता है।
- यही कारण है कि विश्व के जिन भागों में पर्याप्त जल प्रवाह वाली बड़ी-बड़ी नदियाँ मिलती हैं, उनका उपयोग जल परिवहन हेतु किया जाता है।

अध्याय – 2

वैश्विक पवन प्रणाली

विश्व की प्रमुख स्थानीय पवनें, प्रकृति एवं उनके स्थान :-

स्थानीय पवनें किसे कहते हैं?

स्थानीय धरातलीय बनावट, तापमान एवं वायुदाब की विशिष्ट स्थिति के कारण स्वभावतः प्रचलित पवनों के विपरीत प्रवाहित होने वाली पवनें **"स्थानीय पवनों" या "स्थानीय हवाएँ" (lCoal winds)** के रूप में जानी जाती हैं। इनका प्रभाव अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्रों पर पड़ता हैं। ये **क्षोभमण्डल (troposphere)** की सबसे नीचे की परतों तक सीमित रहती हैं।

नोट :- क्षोभमण्डल पृथ्वी के वायुमंडल का सबसे निचला हिस्सा होता है।

व्यापारिक पवनें :-

- दक्षिणी अक्षांश के क्षेत्रों अर्थात् उपोष्ण उच्च वायुदाब कटिबंधों (SubtrpiCoal high Pressure zone) से भूमध्य रेखीय निम्न वायुदाब कटिबंध (Equatrial low Pressure Zone) की ओर दोनों गोलार्द्धों में वर्ष भर निरन्तर प्रवाहित होने वाले पवन को **व्यापारिक पवन (Trade winds)** कहा जाता है। ये पवन वर्ष भर एक ही दिशा में निरन्तर बहती हैं। सामान्यतः इस पवन को उत्तरी गोलार्द्ध में उत्तर से दक्षिण दिशा में तथा दक्षिण गोलार्द्ध में दक्षिण से उत्तरी दिशा में प्रवाहित होना चाहिए, किन्तु **फेरेल के नियम (Ferrel's law)** एवं **कोरोऑलिस बल** के कारण " ये हवाएं पृथ्वी की गति के कारण उत्तरी गोलार्द्ध में दाहिनी ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में बायीं ओर मुड़ जाती हैं।"

व्यापरिक पवनों की विशेषताएं:

- व्यापरिक पवनों को अंग्रेज़ी में **'ट्रेड विंड्स (Trade winds)'** कहते हैं। यहाँ 'ट्रेड' शब्द जर्मन भाषा से लिया गया है, जिसका तात्पर्य 'निर्दिष्ट पथ (Specified way)' या 'मार्ग' से है। इससे स्पष्ट है कि ये हवाएँ एक निर्दिष्ट पथ पर वर्ष भर एक ही दिशा में बहती रहती हैं।
- उत्तरी गोलार्द्ध में ये हवाएँ उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती हैं। वहीं दक्षिणी गोलार्द्ध में इनकी दिशा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर होती हैं।
- नियमित दिशा में निरंतर प्रवाह के कारण प्राचीन काल में व्यापारियों को पाल युक्त जलयानों के संचालन में इन हवाओं से काफ़ी मदद मिलती थी, जिस कारण इन्हें व्यापारिक पवन कहा जाने लगा था।
- भूमध्य रेखा के समीप दोनों व्यापारिक पवन आपस में मिलकर अत्यधिक तापमान के कारण ऊपर उठ जाती हैं तथा **घनघोर वर्षा** का कारण बन जाती हैं, क्योंकि वहाँ पहुँचते-पहुँचते ये जलवाष्प से पूर्णतः संतुष्ट हो जाती हैं।

- व्यापारिक पवनों का विश्व के मौसम पर भी व्यापक प्रभाव पड़ता है।

चिनूक

- पर्वतीय ढाल के सहारे चलने वाली गर्म व शुष्क हवा है जो संयुक्त राज्य अमेरिका मे चलती है। यह पवन रॉकी पर्वत की पूर्वी ढाल में कोलारेडो से उत्तर में कनाडा से कोलंबिया तक चलती है । इस हवा का औसत तापक्रम 40 डिग्री फा० होता है। इस हवा के आगमन से तापक्रम मे अचानक बढ़ने लगती है तथा कभी - कभी तो तापमान मिनटों में 34 डिग्री फा० तक बढ़ जाती है जिसके फलस्वरुप धरातल पर बर्फ अचानक पिघलने लगती है। यह पशु पालकों के लिये लाभदायक होती क्योंकि इससे बर्फ पिघल जाती हैं और घास उग जाती है। इस कारण इस पवन को हिमभक्षी भी कहते हैं।

फॉन

- यह आल्पस पर्वत के उत्तरी ढाल से नीचे उतरने वाली गर्म एवं शुष्क हवा हैं। इसका सर्वाधिक प्रभाव स्विटजरलैण्ड में होता हैं।

सिरोको

- यह सहारा मरुस्थल में भूमध्य सागर की ओर चलने वाली गर्म हवा हैं। सहारा मरुस्थल से इटली में प्रवाहित होने वाली सिरोको हवा बालू के कणों से युक्त होती हैं, तथा सागर से नमी धारण करने के बाद जब इटली में वर्षा करती हैं तो इन बालू के कणों के कारण वर्षा की बूंदे लाल हो जाती हैं। इस प्रकार की वर्षा को इटली में रक्त की वर्षा कहते हैं।

सिमूम

यह अरब के मरुस्थल में चलने वाली गर्म एवं शुष्क हवा हैं।

हरमट्टन

- हरमट्टन सहारा मरुस्थल से दक्षिण पश्चिम दिशा में चलनें वाली गर्म तथा शुष्क हवा हैं। हरमट्टन के आने से अफ्रीका का उष्ण पश्चिमी तट सुहावना हो जाता है। हरमट्टन द्वी भाषा के शब्द "हरमाटा" से लिया गया है। इसी प्रभाव के कारण गिनी तट पर इस हवा को डॉक्टर वायु के नाम से जाना जाता हैं क्योंकि यह वायु इस क्षेत्र के निवासियों को आर्द्र मौसम से राहत दिलाती हैं। इस प्रकार की पवन को उत्तरी अमेरिका में ब्लैक रोलर व फारस की खाड़ी के उत्तर-पूर्व में शामाल कहा जाता है। इस हवा से फसल को नुकसान का खतरा होता हैं।

ब्रिकफिल्डर

- यह आस्ट्रेलिया के विक्टोरिया राज्य में चलने वाली गर्म एंव शुष्क हवा हैं।

साण्टा आना

- साण्टा आना हवाएं मजबूत, बेहद शुष्क ढलान वाली हवाएं हैं जो अंतर्देशीय उत्पत्ति करती हैं । वे ग्रेट बेसिन में ठंडा, सूखे उच्च दबाव वाले वायु द्रव्यमान से निकलते हैं। सांता आना हवाओं को गर्म, सूखे मौसम के लिए जाना जाता हैं जो वे शरद ऋतु (अक्सर साल के सबसे गर्म) में लाते हैं, लेकिन वे वर्ष के अन्य समय में भी पैदा हो सकते हैं। यह कम आर्द्रता, गर्म, संपीड़ित-गर्म हवा द्रव्यमान के साथ संयुक्त, उच्च हवा की गति, गंभीर आग मौसम की स्थिति पैदा करते हैंयह "शैतान हवाओं" के रूप में भी जाना जाता है सांता आना क्षेत्रीय जंगल की आग को फैन करने के लिए कुख्यात है। साण्टा आना दक्षिणी कैलिफोर्निया में साण्टा आना पवन यह दक्षिणी कैलिफोर्निया राज्य (संयुक्त राज्य अमेरिका) में घाटी से चलने वाली गर्म तथा शुष्क पवन हैं ।

नारवेस्ट

- यह न्यूजीलैण्ड में उच्च पर्वतों से उतरने वाली गर्म, शुष्क तथा धूल भरी हवा हैं।

शामल

- यह मेसोपोटामिया (इराक) तथा फारस की खाड़ी में चलने वाली गर्म तथा शुष्क उत्तर-पूर्वी हवा हैं।

मिस्ट्रल

- यह रोन घाटी (फ्रांस) में सर्दी में चलने वाली ठंडी हवा हैं।

बोरा

- यूगोस्लाविया के एड्रियाटिक तट पर चलने वाली ठंडी हवा। एड्रियाटिक सागर के पूर्वी किनारों पर और इटली के उत्तरी भाग में सर्दी में उत्तर-पूर्व से चलने वाली ठंडी हवाओं को बोरा कहा जाता है स्थल से चलने के कारण यह है वशिष्ठ और ठंडी होती हैं।

सिस्टन

- यह पूर्वी ईरान के सिस्टन राज्य में ग्रीष्म काल में चलने वाली तीव्र उत्तरी हवा हैं, जिसकी गति कभी-कभी 110 कि० मी० प्रति घन्टा तक हो जाती हैं। इसे 120 दिन की पवन भी कहा जाता हैं।

नेवाडोज

- यह दक्षिणी अमेरिका के एण्डीज पर्वतीय हिम क्षेत्रों से इक्वेडोर की उच्च घाटियों में नियमित रूप से प्रवाहित होने वाली हवा हैं, जो एक एनाबेटिक हवा हैं। यह पर्वतीय वायु रात्रि-विकिरण बर्फ के सम्पर्क से ठंडी हो जाने के कारण ढालों से नीचे की ओर प्रवाहित होती हैं।

फ्राइजेम

- यह ब्राजील के उष्णटिबन्धीय कैम्पोज क्षेत्र में प्रति चक्रवात उत्पन्न हो जाने के कारण आने वाली तीव्र शीत-लहर हैं, जो मई या जून के महिनों में प्रवाहित होकर इस क्षेत्र के तापमान को 10 डिग्री सेण्टिग्रेड तक घटा देती हैं

बर्गस

- यह दक्षिणी अफ्रीका में जाड़ें में चलने वाली गर्म हवा हैं, जो आन्तरिक पठार से तटीय भाग की ओर चलती हैं।

पोनेन्टी

- यह भूमध्य सागरीय क्षेत्रों विशेषकर कोर्सिको तट तथा भूमध्य सागरीय फ्रांस में चलने वाली शुष्क तथा ठंडी धारा हैं।

विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाले 10 देश

क्रम	देश	जनसंख्या (जुलाई 2015 तक)
1.	चीन	1,361,512,535
2.	भारत	1,251,695,584
3.	संयुक्त राज्य अमेरिका	321,362,789
4.	इण्डोनेशिया	255,993,674
5.	ब्राजील	204,259,812
6.	पाकिस्तान	199,085,847
7.	नाइजीरिया	181,562,056
8.	बांग्लादेश	168,957,745
9.	रूस	146,268,288
10.	जापान	126,919,659

न्यून जनघनत्व के क्षेत्र

- विरल जनसंख्या के प्रदेश पाँच प्रकार के हैं और विरल प्रदेश के अन्तर्गत ही विश्व के प्रतिकूल वातावरण के क्षेत्र हैं।

उच्च अक्षांशीय क्षेत्र

- यह कड़ाके की सर्दी, पाला, हिमचादर और तुषार वातावरण का क्षेत्र है, जहाँ सूर्य की किरणें महीनों दृष्टिगत नहीं होती हैं। सूर्य की किरणें भी उतनी प्रभावशाली नहीं हैं कि वे जीवाणु क्रियाओं (Bacterial Activities) को कायम रख सकें। परिणाम यह है कि यह वीरान जनसंख्या का क्षेत्र है।
- उत्तरी कनाडा, उत्तर पूर्वी साइबेरिया, ग्रीनलैण्ड और कनाडा के अनेक उत्तरी द्वीप वीरान हैं। साइबेरिया के बेरिंग तट पर एस्किमो रहते हैं। साइबेरिया में यूकाघिर तथा कनाडा में भी एस्किमो रहते हैं।

उच्च स्थलाकृति के क्षेत्र

- ऊँचे पर्वतीय या पठारी क्षेत्रों में तापीय संशोधन, कृषि योग्य भूमि का अभाव, " अधिवासीय भूमि का अभाव, पेयजल और जलावन की हिमस्खलन, वनीय जानवरों का भय है।
- स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में मृत्यु दर अधिक है। इन्हीं कारणों से पर्वतीय और ऊँचे पठारी क्षेत्रों में विरल जनसंख्या पाई जाती है। तिब्बत के पठार पर जनसंख्या घनत्व औसतन 3 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। सभी पर्वतीय क्षेत्रों, हिमालय, मध्य एशिया के पर्वत, एटलस आदि में विरल जनसंख्या घनत्व पाया जाता है।

अत्यधिक ताप के क्षेत्र

- उष्ण मरुस्थलीय क्षेत्र अत्यधिक ताप और विरल वर्षा का क्षेत्र है। सहारा का मुख्य मरुस्थल 30 लाख वर्ग किमी क्षेत्रफल में फैला है और उसमें 29 लाख लोग रहते हैं। अत्यधिक ताप, पेयजल की समस्या, कृषि भूमि का अभाव आदि कारणों से यह विरल जनसंख्या का क्षेत्र है।

अत्यधिक वर्षा के क्षेत्र

- विषुवतीय क्षेत्र में अमेजन का मैदान, जायरे बेसिन और दक्षिण पूर्वी एशिया के अनेक द्वीपों में अत्यधिक वर्षा के कारण सघन वन का विकास हुआ है और यहाँ खतरनाक कीड़े-मकोड़े और जानवरों का निवास है।
- इन क्षेत्रों में बाढ़ का भी भय रहता है। यहाँ मृदा अपरदन (Soil Erosion) भी तेजी से होता है। इन्हीं कारणों से यहाँ विरल जनसंख्या पायी जाती है।

अत्यधिक वन के क्षेत्र

- टैगा प्रदेश में वन सघन हैं, जो मानवीय अधिवास के लिए अनुकूल नहीं हैं। इसमें मुख्यतः साइबेरिया, उत्तरी स्कैण्डिनेविया, अलास्का और उत्तरी मध्यवर्ती कनाडा आते हैं। इन प्रदेशों के वन अत्यन्त कीमती हैं। यहाँ जाड़े की ऋतु अत्यन्त कड़ाके की होती है। करीब तीन महीने तक जाड़े में रात्रि का तापमान हिमांक से नीचे चला जाता है। मिट्टी भी फसल के लिए अनुकूल नहीं है, इन्हीं कारणों से यह प्रदेश वीरान रहा है और मानवीय अधिवास को आकर्षित नहीं कर सका है।

सामान्य घनत्व का क्षेत्र

- इसके अन्तर्गत मुख्यतः भूमध्यसागरीय जलवायु क्षेत्र, सवाना प्रदेश, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील का पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र, मध्य अक्षांशीय घास के मैदान, लगभग सम्पूर्ण यूरोप तथा दक्षिण संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे क्षेत्र आते हैं।

विश्व की प्रमुख जनजातियाँ

जनजाति	क्षेत्र
कुलामन	दक्षिण मिण्डनाओ (फिलिपिन्स) के मूल निवसी हैं ।
कुर्द	ईरान, इराक, आर्मीनिया तथा अजरबैजान में बड़े पठारी क्षेत्रों में रहने वाली एक पशुपालन कृषक ।
लाई	म्यांमार के चिन पहाड़ियों में रहने वाली जनजाति ।
लैप्स	दक्षिण स्कैण्डिनेवियाई उत्तरी रूस के कोला प्रायद्वीप की जनजाति जो मत्स्य - संग्रहण, रेन्डियर पालन तथा शिकार से अपना जीवन - यापन करती है ।
माओरी	न्यूज़ीलैण्ड के मूल निवासी
युमा	उत्तरी अमेरिका में दक्षिणी - पश्चिमी एरीज मेक्सिको एवं कैलिफोर्निया में रहने वाले इंडियन लोग ।
युइत	सैबेरिया तथा अलास्का के सेंण्टलोरेन्स द्वीप के एस्कीमो लोग ।
जुलू	दक्षिणी अफ्रीका में नेटाल प्रान्त के बाण्टूभाषी लोग ।
जेमी	असम तथा म्यांमार के सीमांत क्षेत्र में रहने वाले लोग ।
निग्रीटो	ओशिनिया और एशिया के पूर्वी द्वीप समूहों में ये पाए जाते है । यह छोटे कद के निग्रोयड कोग हैं ।

परिस्थितियों का निर्माण होता है जिसे कातिक मास की उष्मा अक्टूबर हीट कहां जाता है।

2. दाब

- इस ऋतु के शुरुआत मे निम्न दाब परिस्थितियों होती है तथा इस ऋतु के समाप्त होते भारत पर उच्च दाब परिस्थितियों निर्मित हो जाती है।

3. पवन

- दक्षिण पश्चिमी मानसून पवनें धीरे-धीरे भारत से विस्थापित होने लगती है तथा इन पवनों के स्थान पर उत्तरी पूर्वी पवनें भारत पर स्थापित होने लगती है।

4. वर्षा

- सामान्यतः इस ऋतु के दौरान भारत पर वर्षा होना समाप्त हो जाती है परन्तु भारत के पूर्वी तटवर्ती क्षेत्र पर उष्ण कटिबन्धीय चक्रवातों के कारण भारी वर्षा प्राप्त होती है। पूर्वी तट पर सर्वाधिक वर्षा इसी ऋतु के दौरान प्राप्त होती है। भारत में अधिकतम चक्रवात अक्टूबर व नवम्बर के बीच आते है।

अध्याय – 3

जल निकासी (अपवाह तंत्र)

जल निकासी व्यवस्था प्रणाली

- अच्छी तरह से परिभाषित चैनलों के माध्यम से पानी के प्रवाह को जल निकासी के रूप में जाना जाता है और ऐसे चैनलों के नेटवर्क को जल निकासी प्रणाली के रूप में जाना जाता है।
- किसी क्षेत्र का जल निकासी पैटर्न भूवैज्ञानिक समय अवधि, प्रकृति और चट्टानों, स्थलाकृति, ढलान आदि की संरचना का परिणाम है।
- गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, कृष्णा, आदि से युक्त लगभग 77% जल निकासी क्षेत्र बंगाल की खाड़ी की ओर उन्मुख है।
- दूसरी ओर, 23% सिंधु, नर्मदा, तापी, माही, और पेरियार सिस्टम अरब सागर में अपने पानी का निर्वहन करते हैं।
- एक नदी नाली एक विशिष्ट क्षेत्र है, जिसे उस नदी के जलग्रहण क्षेत्र के रूप में जाना जाता है।
- एक नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा बहने वाले क्षेत्र को जल निकासी बेसिन के रूप में जाना जाता है।
- । जल निकासी बेसिन को दूसरे से अलग करने वाली सीमा रेखा को वाटरशेड क्षेत्र कहा जाता है।
- जल निकासी पैटर्न (Drainage Pattern)

  निम्नलिखित प्रमुख जल निकासी पैटर्न **जल निकासी व्यवस्था (Drainage System)** को दर्शाती है –
  - वृक्ष के समान
  - रेडियल
  - केंद्र की ओर जानेवाला
  - सलाखें
- एक जल निकासी पैटर्न जो बहुत सारे टहनियों के साथ पेड़ की शाखाओं की तरह दिखता है, **डेंड्रिटिक ड्रेनेज पैटर्न** (वृक्ष के समान) के रूप में जाना जाता है। जैसे कि, उत्तरी मैदान की नदियाँ।
- जब एक पहाड़ी से नदियाँ निकलती हैं और सभी दिशाओं में प्रवाहित होती हैं तो **रेडियल ड्रेनेज पैटर्न** बनता है। जैसे कि, अमरकंटक से निकलने वाली नदियाँ।
- **सेन्ट्रिपेटल ड्रेनेज पैटर्न** (केंद्र की ओर जानेवाला) तब बनता है जब नदियाँ अपने पानी को सभी दिशाओं से एक झील या एक अवसाद में छोड़ देती हैं। जैसे कि, मणिपुर में लोकतक झील।
- **ट्रेली जल निकासी पैटर्न** (सलाखें) तब बनता है जब मुख्य नदियों की प्राथमिक सहायक नदियाँ एक दूसरे के समानांतर बहती हैं और द्वितीयक सहायक नदियाँ उन्हें एक कोण पर जोड़ती हैं। जैसे कि, हिमालयी क्षेत्र के ऊपरी हिस्से में नदियाँ।

  जल निकासी का वर्गीकरण

  उत्पत्ति, प्रकृति और विशेषताओं के आधार पर भारतीय जल निकासी को इस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है-

हिमालयन की जल निकासी और
प्रायद्वीपीय जल निकासी।

नदियाँ

- भारत नदियों का देश है । भारत के आर्थिक विकास में नदियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है । नदियाँ यहाँ आदिकाल से ही मानव की जीविकोपार्जन का साधन रही है ।
- भारत में 4000 से भी अधिक छोटी बड़ी नदियाँ हैं, जिन्हें 23 वृहद् तथा 200 लघु नदी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है ।
- किसी नदी के रेखीय स्वरूप को प्रवाह रेखा कहते हैं । कई प्रवाह रेखाओं के योग को प्रवाह संजला (Drainage Netwrk) कहते है ।
- निश्चित वाहिकाओं (Channels) के माध्यम से हो रहे जल प्रवाह को अपवाह (Drainage) तथा इन वाहिकाओं के जाल को अपवाह तंत्र (Drainage System) कहा जाता है ।

भारतीय अपवाह तंत्र

- अरब सागरीय अपवाह तंत्र
- बंगाल की खाड़ी का अपवाह तंत्र

- अपवाह तंत्र से तात्पर्य किसी क्षेत्र की जल प्रवाह प्रणाली से है अर्थात् किसी क्षेत्र के जल को कौन-सी नदियाँ बहाकर ले जाती है ।
- कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत भाग, जिसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा आदि नदियाँ शामिल हैं । बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती हैं,
- जबकि 23% भाग जिसमें सिंधु, नर्मदा, तापी, माही व पेरियार नदियाँ शामिल हैं । अपना जल अरब सागर में गिराती हैं ।
- नदी अपना जल किसी विशेष दिशा में बहाकर समुद्र में मिलाती है, यह कई कारकों पर निर्भर करता है । जैसे भूतल का ढ़ाल, भौतिक संरचना, जल प्रवाह की माना एवं जल का वेग ।

जल सम्भर क्षेत्र / Wateshad area

जल संभर क्षेत्र के आकार के आधार पर भारतीय अपवाह श्रेणियों को तीन भागों में बाँटा गया है

1. प्रमुख नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 20000 वर्ग km से अधिक है । इसमें 14 नदियाँ श्रेणियाँ शामिल है । जैसे - गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, तापी, नर्मदा, माही, पेन्नार, साबरमती, बराक आदि ।
2. मध्यम नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 से 20,000 वर्ग km के बीच है । इसमें 44 नदी श्रेणियाँ हैं, जैसे - कालिंदी, पेरियार, मेघना आदि ।
3. लघु नदी श्रेणी: जिनका अपवाह क्षेत्र 2000 वर्ग km से कम है । इसमें न्यून वर्षा के क्षेत्रों मे बहने वाली बहुत सी नदियाँ शामिल हैं ।

अपवाह प्रवृत्ति

1. **पूर्ववर्ती अथवा प्रत्यानुवर्ती अपवाह** - वे नदियाँ, जो हिमालय पर्वत के निर्माण के पूर्व प्रवाहित होती थी तथा हिमालय के निर्माण के पश्चात् महाखण्ड़ बनाकर अपने पूर्व मार्ग से प्रवाहित होती हैं ।जैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र, सतलुज, सिंधु
2. **अनुवर्ती नदियाँ** - वे नदियाँ, जो समान्य ढाल की दिशा में बहती है। । प्रायद्वीपीय भारत की अधिकतर नदियाँ अनुवर्ती नदियाँ है ।
3. **परवर्ती नदियॉ** - चम्बल, सिंद्ध, बेतवा, सोन आदि नदियाँ गंगा और यमुना में जाकर समकोण पर मिलती हैं । गंगा अपवाह तंत्र के परवर्ती अपवाह का उदाहरण है ।
4. **दुमाकृतिक अपवाह** - वह अपवाह जो शाखाओं में फैला हो, जो द्विभाजित हो तथा वृक्ष के समान प्रतीत हो उसे दुमाकृतिक अपवाह कहते है ।
5. **जालीनुमा अपवाह** - यह एक आयताकार प्रतिरूप है । जहाँ मुख्य नदियाँ एक दूसरे से समान्तर बहती हैं और सहायक नदियाँ समकोण पर पायी जाती हैं ।
6. **कंटकीय प्रतिरूप** - अपवाह का प्रतिरूप जहाँ मुख्य नदी के साथ सहायक नदियाँ के संगम में एक असंगत सम्मिलन नजर आता है ।
7. **आयताकार अपवाह** - वह अपवाह प्रतिरूप, जिसकी विशेषता सहायक नदियों एवं मुख्य नदी के बीच समकोणीय घुमाव एवं समकोणीय सम्मिलन है ।
8. **अरीय प्रतिरूप** - इस अपवाह प्रतिरूप में किसी केन्द्रीय स्थान से नदियों का बहिर्गमन होता है, जो एक पहिये के अरों के अनुरूप होता है ।
9. **वलयाकार प्रतिरूप** - इस प्रकार के अपवाह प्रतिरूप में, परवर्ती नदियाँ अनुवर्ती नदी से जुड़ने से पहले वक्र अथवा चापाकार मार्ग से होकर गुजरती हैं ।
   यह आंशिक रूप से भूमिगत वृत्ताकार संरचना के अनुकूलन का परिणाम है ।

भारत में अपवाह तंत्र

- भारत के अपवाह तंत्र का नियंत्रण मुख्यतः भौगोलिक स्वरूप के द्वारा होता है ।
- भारतीय नदियाँ का विभाजन
- उद्गम एवं प्रकृति के आधार पर
- हिमालयी या उत्तरी भारत का अपवाह तंत्र
- प्रायद्वीपीय या दक्षिणी भारत का अपवाह तंत्र

अपवाह तंत्र

यद्यपि इस विभाजन योंजना में चंबल, बेतवा, सोन आदि नदियों के वर्गीकरण में समस्या उत्पन्न होती है। क्योंकि उत्पत्ति व आयु में ये हिमालय से निकलने वाली नदियों से पुरानी है । फिर भी यह अपवाह तंत्र के वर्गीकरण का सर्वमान्य आधार है ।

- यह हरिके बेराज के पास सतलज नदी में जाकर मिल जाती है ।
- पार्वती, सैन्ज, तीर्थन, ऊहल इसकी सहायक नदियाँ है ।

रावी नदी (परूष्णी नदी या इरावती नदी)

- यह नदी सिन्धु की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है।
- जो हिमालय की कुल्लु की पहाड़ियों में स्थित रोहतांग दर्रे के पश्चिम से निकलती हैं तथा चंबा घाटी से होकर बहती है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिन्धु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती है ।
- अंत में ये झांग जिले की सीमा पर चिनाब नदी में मिल जाती है ।

चिनाब नदी (अस्किनी)

- यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी है ।
- यह लाहुल में बरालाचाला दर्रे के विपरीत दिशा में चंद्रा और भाग नामक दो सरिताओं के मिलने से बनती है ।
- ये सरिताएँ हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट तांडी में आपस में मिलती हैं ।
- इसलिए इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का बहाव क्षेत्र 1180 किमी हैं ।
- यह त्रिमू के निकट झेलम नदी में जाकर मिलती है ।

झेलम नदी (वितस्ता)

- यह सिन्धु की सहायक नदी है ।
- जो कश्मीर घाटी के दक्षिण-पूर्वी भाग में पीरपंजाल गिरिपद में स्थित वेरीनाग के निकट शेषनाग झरने से निकलती है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले यह नदी श्रीनगर और वुलर झील से बहते हुए एक तंग व गहरे महाखण्ड से गुजरती है ।
- पाकिस्तान में झंग के निकट यह चिनाब नदी से मिलती है ।

गंगा नदी तंत्र

गंगा नदी

- गंगा नदी का उदगम् उत्तराखंड राज्य के उत्तरकाशी जिले में गोमुख के निकट गंगोत्री हिमनद से हुआ है। जहां यह भागीरथी के नाम से जानी जाती है।
- गंगा नदी की कुल लम्बाई 2525 किलोमीटर (उत्तराखंड) में 110 किलोमीटर उत्तरप्रदेश में 1450 किलोमीटर तथा बिहार में 445 km व पश्चिम बंगाल में 520 किलोमीटर) है।
- उत्तराखंड में देवप्रयाग में भागीरथी, अलकनंदा नदी से मिलती है तथा इसके बाद यह गंगा कहलाती है ।
- अलकनंदा नदी का स्त्रोत बद्रीनाथ के ऊपर सतोपथ हिमनद से हुआ है।
- अलकनंदा, धौली गंगा और विष्णु गंगा धाराओं से मिलकर बनती है, जो जोशीमठ या विष्णु प्रयाग में मिलती है ।
- भागीरथी से देव प्रयाग में मिलने से पहले अलकनंदा से कई सहायक नदियाँ आकर मिलती है।

स्थान	नदी संगम
विष्णु प्रयाग	धौलीगंगा + अलकनंदा
नंद प्रयाग	मंदाकिनी + अलकनंदा
कर्ण प्रयाग	पिंडार + अलकनंदा
रूद्रप्रयाग	मंदाकिनी + अलकनंदा
देवप्रयाग	भागीरथी + अलकनंदा

- गंगा नदी हरिद्वार (उत्तराखंड) के बाद मैदानी क्षेत्रो में प्रवेश करती है तथा अपने दक्षिण पूर्व में बहते हुए इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में पहुँचती है जहाँ इससे यमुना नदी (गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी) आकर मिलती है।
- इसके बाद यह बिहार व पश्चिम बंगाल मे प्रवेश करती है। पश्चिम बंगाल में यह दो वितरिकाओं (धाराओं) में विभाजित हो जाती है। एक धारा हुगली नदी कहलाती है जो कलकत्ता में चली जाती है तथा मुख्य धारा पश्चिम बंगाल बहती हुए बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है।
- बांग्लादेश में प्रवेश करने के बाद इससे ब्रह्मपुत्र नदी आकर मिलती है इसके बाद यह पदमा के नाम से जानी जाने लगती है ।
- अन्त में यह बंगाल की खाड़ी में अपना जल गिराती है ।
- **गंगा की प्रमुख सहायक नदियाँ है -** यमुना (सबसे लम्बी सहायक नदी), रामगंगा, गोमती, घाघरा, गंडक, कोसी, महानंदा, सोन (दाहिनी तरफ से) इत्यादि ।

यमुना नदी -

- इस नदी का उद्गम उत्तराखंड में बदरपूंछ श्रेणी की पश्चिमी ढाल पर स्थित यमुनोत्री हिमनद से हुआ है।
- यमुना नदी गंगा की सबसे पश्चिमी व सबसे लम्बी नदी है । जो गंगा से इलाहाबाद में आकर मिलती है।
- प्रायद्वीप पठार से निकलने वाली चंबल सिंध, बेतवा केन इसके दाहिने तट पर मिलने वाली सहायक नदियाँ है इसके बाएँ तट पर हिंडन रिंद सेंगर वरुणा आदि नदियाँ मिलती है।

- **चम्बल नदी-** मध्यप्रदेश के मालवा पठार में महू के निकट निकलती है तथा राजस्थान के कोटा में बहते हुए उत्तरप्रदेश में यमुना से आकर मिलती है यह अपनी 'उत्खात् भूमि' (Badlnd Tpgraphy) के लिए प्रसिद्ध है।
- **रामगंगा नदी-** उत्तराखण्ड में गैरसेन के निकट गढ़वाल की पहाड़ियों से निकलती है तथा कन्नौज उत्तरप्रदेश में गंगा से आकर मिल जाती है ।
- **गोमती नदी-** पीलीभीत जिलें से निकलती है तथा गाजीपुर में गंगा नदी से मिलती है। लखनऊ व जौनपुर इसी के किनारे बसे हैं ।
- **घाघरा नदी-** तिब्बत के पठार में स्थित मापचाचुंगों हिमनद से निकलती है तथा बाराबंकी जिला में शारदा नदी (काली

वित्तीय पूंजी बहाव स्वतंत्र और तात्कालिक हो। " डब्ल्यू. टी.ओ. के लिए वैश्वीकरण का अर्थ है, " विश्व की अर्थव्यवस्थाओं का माल और सेवाओं, पूंजी का श्रम बल की अबाधित क्रॉस ब्रॉर्डर आवाजाही। " इसका साधारण अर्थ है की जो राष्ट्र डब्ल्यू. टी. ओं. के वैश्वीकरण की प्रक्रिया में हस्ताक्षरकर्ता हैं, उनके लिए विदेशी या देशज सामान और सेवाओं, पूंजी और श्रम जैसा कुछ भी नहीं होगा। विश्व समय के साथ एक समान और सपाट अवसर स्थल बन रहा है।

भारत के महत्वपूर्ण उद्योग

1. लौह इस्पात उद्योग

- देश के पहले सफल उद्योग की 1874 में प. बंगाल में कुल्टी में बराकर आयरन वर्क्स की स्थापना की गई।
- 1907 में जमशेदजी टाटा द्वारा साकची (वर्तमान नाम जमशेदपुर) में टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी की स्थापना की गई। इसमें इस्पात का उत्पादन 1913 से आरम्भ हुआ।
- 1908 में प. बंगाल की दामोदर नदी घाटी में हीरापुर नामक स्थान पर भारतीय लौह इस्पात कंपनी स्थापित हुई।
- 1923 में कर्नाटक के भद्रावती में विश्वेश्वरैया लोहा एवं इस्पात कारखाने की स्थापना की गई।
- 1937 में बर्नपुर में स्टील कार्पोरेशन ऑफ बंगाल की स्थापना की गई।
- 1953 में स्थापित बर्नपुर, हीरापुर एवं कुल्टी के कारखानों को इस्को (IISC) के नाम से जाना जाता है।
- द्वितीय योजनाकाल (1956 से 62) में तीन नए कारखानों- भिलाई (मध्य प्रदेश-रूस के सहयोग से) दुर्गापुर (प. बंगाल-ब्रिटेन के सहयोग से) एवं राउरकेला (उड़ीसा-पश्चिमी जर्मनी के सहयोग से) की स्थापना की गई। इन तीनों कारखानों को हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड के अंतर्गत रखा गया।
- तीसरी पंचवर्षीय योजनाकाल में 1968 में बोकारो (झारखंड) में सोवियत रूस के सहयोग से स्टील प्लांट की स्थापना का निर्णय लिया गया और 1974 से उत्पादन शुरू हुआ।
- चौथी पंचवर्षीय योजनाकाल में सलेम (तमिलनाडु), विशाखापत्तनम (आंध्र प्रदेश) एवं विजयनगर (कर्नाटक) में इस्पात कारखाना स्थापित किया गया।
- 1978 में सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत लोहा एवं इस्पात उद्योग के विकास के लिए सेल (स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया) की स्थापना की गई। वर्तमान समय में दुर्गापुर, राउरकेला, बोकारो, भिलाई, सलेम के कारखाने सेल के अंतर्गत आते हैं।
- द. कोरिया के पोस्को (PSC) की भारतीय अनुवंशी कंपनी पोस्को इण्डिया द्वारा उड़ीसा में निर्माणाधीन इस्पात संयंत्र का पहला चरण 2010 में पूर्ण हो गया ।
- विश्व की प्रमुख इस्पात कंपनियों क्रमशः मित्तल स्टील, आर्सेलर, निप्पो स्टील, पोस्को, जेएफई स्टील, शंघाई बाओस्टील, यूएस स्टील, नूकर, कोरस एवं रीवा।

2. सीमेंट उद्योग

- सीमेंट का उत्पादन एवं उपभोग किसी देश के विकास का मापदंड है। भारत में सीमेंट उद्योग के विकास की वास्तविक शुरुआत 1914 में हुई, जब पोरबंदर (गुजरात) में सीमेंट का कारखाना लगाया गया।
- 1934 में एसोसिएट सीमेंट कंपनी लि. (ACC) की स्थापना की गई।
- भारत का सबसे बड़ा सीमेंट उत्पादक राज्य राजस्थान है।
- भारत के प्रमुख सीमेंट उत्पादक राज्य निम्न हैं-

➢ **राजस्थान-** जयपुर, लाखेरी, चुरु, ब्यावर, सीकर, चित्तौड़गढ़, सवाई माधोपुर।
➢ **मध्य प्रदेश-** सतना, कटनी, जबलपुर, बनमोर (ग्वालियर), रतलाम, नीमच।
➢ **छत्तीसगढ़-** दुर्ग, जामुल, तिलदा, मंधार, अलकतरा, रायपुर।
➢ **उत्तर प्रदेश-** मिर्जापुर, चुकं, चोपन।
➢ **झारखंड-** जपला, खेलारी, कल्याणपुर, सिन्दरी, झीकपानी, चाइबासा, बनजारी।
➢ **उड़ीसा-** राजगंगपुर, हीराकुंड।
➢ **आंध्र प्रदेश-** कृष्णा, विजयवाड़ा, मनचेरियल, मछेरिया, पनयम, मसूलीपट्टनम, गुन्टूर।
➢ **कर्नाटक-** भोजपुर, भद्रावती, बागलकोट, बंगलौर, बीजापुर, गुलबर्गा।
➢ **तमिलनाडु-** डालमियापुरम्, मधुकराय, तुलकापट्टी, तिरुनेलवेली।
➢ **केरल-** कोट्टायम। - गुजरात- पोरबन्दर द्वारका, सीका (जामनगर),
➢ भावनगर, सेवालियम और रानायाय।
➢ **पंजाब-** सूरजपुर।
➢ **हरियाणा-** चरखी दादरी, सूरजपुर, डालमिया दादरी।
➢ **बिहार-** डालमिया नगर।

3. एल्यूमिनियम उद्योग

- देश में एल्यूमिनियम का पहला कारखाना 1937 में प. बंगाल में आसनसोल के निकट जयनगर (जे.के) नगर में स्थापित किया गया था।
- वर्तमान समय में एल्यूमिनियम के कारखाने पुरी (बिहार), अलवाये (केरल), बेलूर (पं. बंगाल). हीराकुंड (उड़ीसा), रेणुकूट (उत्तर प्रदेश), मैसूर (तमिलनाडु), कोरबा (छत्तीसगढ़), कोयना (महाराष्ट्र) बेलगाँव (कर्नाटक) में स्थापित हैं।
- बॉक्साइट अयस्क को शुद्ध करके उससे एल्यूमिना प्राप्त किया जाता है, फिर उससे एल्यूमिनियम बनाया जाता है।

अध्याय – 8

भारत का संघीय सिस्टम

भारतीय संसद

संघीय विधानमंडल (संसद)

- भारतीय संविधान के अनु. 79 के अनुसार संसद के तीन अंग होते है - राष्ट्रपति, राज्यसभा और लोकसभा
- भारतीय संसद की संप्रभुता न्यायिक समीक्षा से प्रतिबंधित है ।
- संसद में स्थगन प्रस्ताव (adjurnment mtin) लाने का उद्देश्य सार्वजनकि महत्व के अति आवश्यक मुद्दों पर बहस करना है ।

संसद से सम्बंधित अनुच्छेद	
अनु.	सम्बंधित विषय – वस्तु
79	संसद का गठन
80	राज्य सभा की सरंचना
81	लोक सभा की सरंचना
82	प्रत्येक जनगणना के पश्चात पुन: समायोजन
83	संसद के सदनों की अवधि
84	संसद की सदस्यता के लिए अर्हता
85	संसद के सत्र सत्रावसान एवं विघटन
86	राष्ट्रपति का सदनों को सम्बोधित तथा उनको संदेश देने का अधिकार
87	राष्ट्रपति का विशेष सम्बोधन अभिभासण
88	सदनों के सम्बंध में मंत्रियों और महान्यायवादी के अधिकार
89	राज्य सभा का सभापति तथा उपसभापति
90	राज्य सभा के उपसभापति के पद की रिक्ति, त्याग तथा पद से हटाया जाना ।
91	सभापति के कर्तव्यों के निर्वहन अथवा सभापति के रूप में कार्य करने की उपसभापति अथवा अन्य व्यक्ति की शक्ति
92	जब राज्य सभा के सभापति अथवा उपसभापति को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना
93	लोक सभा का अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष
94	लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष पद की रिक्ति, त्यागपत्र तथा पद से हटाया जाना
95	लोक सभा उपाध्यक्ष अथवा किसी अन्य व्यक्ति का लोक सभा अध्यक्ष के कर्तव्यों के निर्वहन की शक्ति
96	जब लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना ।
97	सभापति व उपसभापति तथा अध्यक्ष व उपाध्यक्ष के वेतन-भत्ते
98	संसद का सचिवालय
99	सदस्यों द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान
100	दोनों सदनों में मतदान, रिक्तयों के होते हुए भी सदनों की कार्य करने की शक्ति तथा गणपूर्ति
101	स्थानों का रिक्त होना
102	संसद की सदस्यता के लिए निरर्हताएं
103	सदस्यों की अयोग्यता से सम्बंधित प्रश्नों पर निर्णय
104	अनु. 99 के अंतर्गत शपथ लेने या प्रतिज्ञान करने से पहले अर्हत न होते अथवा निरर्हत किए जाने पर भी सदन में बैठने तथा मतदान करने पर दंड।

लोकसभा (art-81)

- लोकसभा को निम्न सदन / प्रथम सदन / अस्थाई सदन / लोकप्रिय सदन कहते हैं।
- प्रथम लोकसभा का गठन 17 अप्रैल, 1952 को हुआ था।
- अनच्छेद 81 तथा 331 लोकसभा के गठन से संबंधित है ।
- लोकसभा में अधिकतम 552 सदस्य हो सकते हैं । इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि केंद्र शासित प्रदेशों से 20 सदस्य चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं ।
- लोकसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 545 से इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि 13 सदस्य केंद्र शासित प्रदेशों से चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल
- भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- 91वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2001 में प्रावधान किया गया है कि लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 सन् 2026 तक बनी रहेगी।
- लोकसभा का कार्यकाल अपनी प्रथम बैठक से अगले 5 वर्ष तक होती है।

लोकसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएं होनी आवश्यक हैं:

- वह भारत का नागरिक हो ।
- उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो।
- वह संघ सरकार तथा राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो (सरकारी नौकरी में न हो)
- वह पागल / दिवालिया न हो ।
- लोकसभा - अध्यक्ष का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है,
- किन्तु अपने पद से वह स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है अथवा अविश्वास प्रस्ताव द्वारा उसे हटाया जा सकता है।
- 61वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1989 के द्वारा यह व्यवस्था कर दी गई कि 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाला नागरिक लोकसभा या राज्य विधानसभा के सदस्यों को चुनने के लिए वयस्क माना जाएगा।

- लोकसभा विघटन की स्थिति में 6 मास से अधिक नहीं रह सकती।
- लोकसभा का गठन अपने प्रथम अधिवेशन की तिथि से पाँच वर्ष के लिए होता है।
- लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर लोकसभा का विघटन राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष के पहले भी किया जा सकता है।
- क्योंकि लोकसभा के दो बैठकों के बीच का समयान्तराल 6 मास से अधिक नहीं होना चाहिए।
- लोकसभा की अवधि एक बार में 1 वर्ष से अधिक नहीं बढ़ायी जा सकती है।
- आपात उद्घोषणा की समाप्ति के बाद 6 माह के अन्दर लोकसभा का सामान्य चुनाव कराकर उसका गठन आवश्यक है।
- लोकसभा का अधिवेशन 1 वर्ष में कम से कम 2 बार होना चाहिए
- अनुच्छेद 85 के तहत राष्ट्रपति को समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन, राज्यसभा एवं लोकसभा को आहुत करने, उनका सत्रावसान करने तथा लोकसभा का विघटन करने का अधिकार प्राप्त है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा का प्रमुख पदाधिकारी होता है और लोकसभा की सभी कार्यवाहियों का संचालन करता है।
- लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है।
- लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की तिथि राष्ट्रपति निश्चित करता है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा के सामान्य सदस्य के रूप में शपथ लेता है।
- लोकसभा अध्यक्ष को कार्यकारी अध्यक्ष शपथ ग्रहण कराता है।
- आगामी लोकसभा चुनाव के गठन के बाद उसके प्रथम अधिवेशन की प्रथम बैठक तक अपने पद पर बना रहता है। लोकसभाध्यक्ष उपाध्यक्ष को अपना त्यागपत्र दे देता है।

राज्यों में लोकसभा सदस्यों की संख्या

1.	उत्तर प्रदेश	80	15.	झारखण्ड	14
2.	महाराष्ट्र	48	16.	पंजाब	13
3.	पश्चिम बंगाल	43	17.	छत्तीसगढ़	11
4.	बिहार	40	18.	हरयाणा	10
5.	तमिलनाडु	39	19.	उत्तराखंड	5
6.	मध्य प्रदेश	29	20.	हिमांचल प्रदेश	4
7.	कर्नाटक	28	21.	अरुणांचल प्रदेश	2
8.	गुजरात	26	22.	गोवा	2
9.	राजस्थान	25	23.	मणिपुर	2
10.	आंध्र प्रदेश	25	24.	मेघालय	2
11.	ओडिशा	21	25.	त्रिपुरा	2
12.	केरल	20	26.	मिजोरम	1
13.	तेलंगाना	17	27.	नागालैंड	1
14.	असम	14	28.	सिक्किम	1

केन्द्रशासित प्रदेश लोकसभा सदस्यों की संख्या

1.	दिल्ली	7
2.	जम्मू और कश्मीर	5
3.	दादर और नगर हवेली तथा दमन और दीव	2
4.	चंडीगढ़	1
5.	लद्दाख	1
6.	लक्षद्वीप	1
7.	अंडमान और निकोबार द्वीप	1
8.	पुदुचेरी	1

राज्यसभा (art-80)

- राज्यसभा को उच्च सदन /द्वितीय सदन /स्थायी सदन / संघीय सदन भी कहा जाता है ।
- राज्यसभा राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है ।
- यह एक स्थाई सदन है और कभी भंग नहीं होता
- किन्तु इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष के बाद स्थान खाली कर देते हैं, जिनकी पूर्ति नए सदस्यों से होती है।
- भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है।
- राज्यसभा में अधिक-से-अधिक 250 सदस्य हो सकते हैं। इनमें 238 राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों से निर्वाचित और 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत होते हैं। ये 12 सदस्य ऐसे होते हैं जिन्हें साहित्य, विज्ञान, कला सामजिक सेवा इत्यादि का विशेष ज्ञान होता है।
- राज्यसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 245 में, राज्यों से 233 तथा राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत 12 सदस्य होते हैं।

राज्यों के प्रतिनिधि - सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रीति से होता है। राज्यों के प्रतिनिधि अपने राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा निर्वाचित होते है। यह निर्वाचन आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्दति से तथा एकल संक्रमणीय मत विधि के अनुसार होता है।

- भारत में राज्यसभा के गठन के विषय में एक ओर दक्षिण अफ्रीका की अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली और दूसरी ओर आयरलैंड की मनोनयन प्रणाली को अपनाया गया है। राज्यसभा में प्रतिनिधियों की संख्या उस राज्य की जनसंख्या के आधार पर निश्चित की गई है।

राज्यसभा की सदस्यता के लिए योग्यताएँ

- उसे भारत का नागरिक होना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र संघ (United nations organisation) –

- संयुक्त राष्ट्र 24 अक्टूबर 1945 को अस्तित्व में आया। इसके 51 संस्थापक सदस्य थे।
- वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देश हैं। दक्षिण सूडान, 2011 में सम्मिलित होने वाला नवीनतम सदस्य है।
- संयुक्त राष्ट्र की छह आधिकारिक भाषाएं अरबी, चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश हैं।
- संयुक्त राष्ट्र संघ के मिशन और कार्य का मार्गदर्शन इसके संस्थापक चार्टर (funding Charter) में समाहित उद्देश्य एवं सिद्धांतों द्वारा किया जाता है।
- संयुक्त राष्ट्र तंत्र विशेष कार्यक्रमों और निधियों के साथ-साथ छह प्रमुख अंगों को समाहित करता है।
- वर्तमान में पुर्तगाल के एंटोनियो गुटेरेस संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव हैं।
- संयक्त राष्ट्र के पांच प्रमुख अंगों में से चार अंग, न्यूयॉर्क में स्थित संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में स्थित हैं। जबकि अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग में स्थित है, तथा अन्य प्रमुख अभिकरण जिनेवा, वियना, और नैरोबी स्थित संयुक्त राष्ट्र कार्यालय में स्थित हैं। संयुक्त राष्ट्र की अन्य संस्थाएँ संपूर्ण विश्व में अलग अलग स्थानों पर स्थित हैं।
- संयक्त राष्ट्र का वित्तपोषण इसके सदस्यों द्वारा अनिवार्य और स्वैच्छिक योगदानों के माध्यम से किया जाता है।
- चार्टर में किसी प्रकार के संशोधन के लिए महासभा के दो तिहाई बहुमत की आवश्यकता होती है।

चार्टर और अधिदेश (Charter and Mandate)

चार्टर के अनुसार संयुक्त राष्ट्र के निम्नलिखित चार प्रयोजन हैं:

- अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना
- राष्ट्रों के बीच मित्रतापूर्ण संबंध विकसित करना
- अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में सहयोग करना और मानव अधिकारों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना
- राष्ट्रों की कार्रवाइयों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने वाले केंद्र के रूप में कार्य करना

प्रमुख अंग (The principal organs)

- महासभा (General Assembly)
- सुरक्षा परिषद (Security Council)
- आर्थिक एवं सामाजिक परिषद (Economic and Social Council)
- सचिवालय (Secretariat)
- अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (InterNational Court of Justice)
- न्यास परिषद (Trusteeship Council)

महासभा (The General Assembly)

- महासभा, विचार-विमर्श, नीति निर्माण तथा प्रतिनिधित्व हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रमुख अंग है।
- महासभा में संयुक्त राष्ट्र के सभी 193 सदस्य राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व होता है। इस प्रकार यह संयुक्त राष्ट्र का ऐसा एकमात्र निकाय है जिसमें सार्वभौमिक प्रतिनिधित्व है।
- यह सुरक्षा परिषद में अस्थायी सदस्यों का चुनाव करती है एवं साथ ही सामाजिक और आर्थिक परिषद के सदस्यों का भी चुनाव करती है।
- सुरक्षा परिषद के साथ-साथ यह अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीशों का भी चयन करती है।
- प्रत्येक वर्ष सितंबर में न्यूयॉर्क स्थित महासभा हॉल में संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्यों के वार्षिक महासभा सत्र, एवं सामान्य विचार-विमर्श हेतु बैठक का आयोजन किया जाता है। इस बैठक में कई राष्ट्राध्यक्षों द्वारा भाग लिया जाता है एवं बैठक को संबोधित किया जाता है।
- शांति एवं सुरक्षा, नए सदस्यों के प्रवेश एवं बजटीय मामलों जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर निर्णय के लिए महासभा के दो तिहाई बहुमत की आवश्यकता होती है।
- अन्य प्रश्नों पर सामान्य बहुमत द्वारा निर्णय लिए जाते हैं।
- महासभा प्रत्येक वर्ष, एक वर्ष के कार्यकाल हेतु महासभा अध्यक्ष का चुनाव करती है।
- नवंबर 1950 में पारित इसके "शांति के लिए एकता (Uniting for Peace)" प्रस्ताव [प्रस्ताव 377 (V)] के अनुसार- शान्ति व्यवस्था पर किसी प्रकार का खतरा होने या उसका उल्लंघन प्रतीत होने या आक्रामकता की कार्रवाई के मामले में, किसी स्थायी सदस्य के नकारात्मक मत के कारण सुरक्षा परिषद द्वारा कार्रवाई करने में विफल रहने पर महासभा भी कार्रवाई कर सकती है।
- महासभा अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखने या पुनर्स्थापित करने हेतु सामूहिक उपाय करने के लिए सदस्यों को अनुशंसाएँ प्रदान करने के दृष्टिकोण से किसी मामले पर तत्काल विचार " कर सकती है।
- अक्टूबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA). सुरक्षा परिषद सुधारों हेतु वार्ता का एक - मसौदा अपनाने हेतु सहमत हुई।

सुरक्षा परिषद (The Security Council)

- संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 24 के अंतर्गत, संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों ने अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाये रखने का प्रमुख उत्तरदायित्व सुरक्षा परिषद को प्रदान किया।
- परिषद के कार्य मुख्य रूप से दो श्रेणियों के अंतर्गत सम्मिलित होते हैं:
- विवादों का शांतिपूर्ण समाधान ।
- शांति को खतरा शांति का उल्लंघन एवं आक्रामकता के संबंध में कार्रवाई।
- इसमें 15 सदस्य हैं (5 स्थायी एवं 10 अस्थायी सदस्य)। अस्थायी सदस्य दो वर्ष कठ अवधि के लिए चुने जाते हैं। अंतिम बार 1965 में इसकी सदस्यता का विस्तार किया गया था।
- 10 अस्थायी सदस्यों को निम्नलिखित पैटर्न के अनुसार निर्वाचित किया जाना चाहिए: अफ्रीकी एवं एशिया-प्रशांत

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
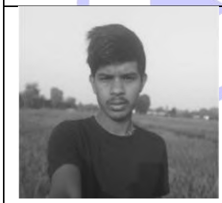	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
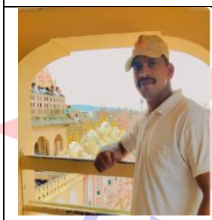	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/tiy32p

Online order करें – https://shorturl.at/coEI9

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE